पदरज खोंटो। मानुष उड़ि उड़ि जात काठकी गति है छोटो॥ गति है छोटो मोरि प्रभु बात कहौं डर डारिकै। रज मानुष कर मूरि कछु मागहु नाउ निहारिकै॥ ५०॥

तरनि होय मुनिकी घरनि मरै सकल परिवार। कोटि करो आनन छुरो कहो बचन शतबार॥ कहो बचन शतबार नाउ नहिं तुम्हैं चढ़ाऊं। अपने कुलको हानि होय जो तुम्हैं चढ़ाऊं॥ तुम्है चढ़ाऊं नाथ जब चरण प्रछालौं निज करनि। बिन धोये न चढ़ाय हौं तरनि होय मुनिकी घरनि॥ ५१॥

चरण प्रछाल बिलम्ब कह राम कह्यो मुसक्याय। पानी आन्यो दुहुं करनि धर्यो कठोता आय। धर्यो कठोता आय पाँयँ पुनि धोवन लाग्यो। देवन बर्षे फूल कहत यहि समको भाग्यो॥ यहि सम बड़भागी कहा शिवविरञ्चि पदकमल चह। धन्य धन्य कहि सकल सुर चरण प्रछाल कुटुम्ब सह॥ ५२॥

कौन पार परिवारको चरणसुधाजल प्याय। पीछे पार उतारियो निज कर कोशलराय॥ निज कर कोशल-राय उतरि सिय सहित बहोरी। केवट लीन बुलाय लेहु उतराई थोरी॥ उतराई थोरी लहो तोहिं भयो श्रम पारको। दीन देखि मोहिं दीन बहु पार कौन परिवारको॥ ५३॥

ते पद धोये आजु मैं शिव विधि योग कमाहिं। जिन चरणनको शेष श्रुति बरणत निशिदिन जाहिं॥ बरणत निशिदिन जाहिं प्रकट कीन्हो जिन गङ्गा। अशरण शरण पुनीत पगनिको बिरद अभङ्गा॥ बिरद अभंग प्रमाणको धोये जनक समाजमैं। सकल सिद्ध सिद्धन दई ते पद धोये आजमैं॥ ५४॥

बिमल भक्ति बर दै चले राम लषण सिय सङ्ग। बन गिरि सरिसर ग्राम पुर देखत मृगजु विहङ्ग। देखत मृगजु विहङ्ग

ग्रामपुर निकसहिं जाई। देखि कहहिं नरनारि रामसिय सुन्दरताई॥ रामसिया सह अनुज युत देखि भाग तिनके भले। प्रेम नेम जप योगफल विमल भक्ति बर दे चले॥ ५५॥

एक कहत मुख चन्दसों भामिनि भावत मोहि। कला कोश शशि शीतकर सीता कलित सजोहि॥ सीता कलित सजोहि श्याम रेखा शशिमाहीं। सिय मुखपर लट श्याम सुभग वरणत कवि ताहीं॥ वरणत कवि मृगअङ्क कहि यह मृगनयन अनन्दसो। ताप हरत यह शशिमुखी एक कहत मुख चन्दसों॥ ५६॥

एक कहति मुख कमलसो ओर न पटतर ताहि। अरुण सुवासित अति मृदुल सो सियमुख अवगाहि॥ सो सिय-मुख अवगाहि शीत सुत वह यह सीता। कवि वरणत हैं वाहि याहि मुख सुयश पुनीता॥ सुयश पुनीता दुहुनको भ्रमर मिल युग सुयलसो। और कहाँ उपमा लगे एक कहति मुख कम-लसो॥ ५७॥

सीतामुख सो मुख कहो कमल चन्द्र सो नाहिं। कमल मन्द है रजनि द्युति चन्द मन्द दिनमाहि॥ चन्द मन्द दिन-माहि राहु हिमिशत्रु सदाई। सीतामुख अरि नाहि लोक-तिहुँ खोजहु जाई॥ लोकतिहूँ महँ बिदित है घटै बढ़ै निशिदिन लहो। कमल चन्द पटतर कहाँ सीता मुख सो मुख कहो॥ ५८॥

एक कहैं पुर धन्य है मातु पिता पुनि धन्य। जिन देखे ते धन्य हैं जहाँ जात धन धन्य॥ जहाँ जात धन धन्य बिटप गिरि सरि सर जेते। खग मृग निरखत धन्य बसत थल बैठत तेते॥ बैठत तेते सङ्ग हँसि बोलत चितवत धन्य हैं। धन्य पथ वन धन्य हैं रूप देखत अति धन्य हैं॥ ५९॥

राम लषण सीता सहित देखि प्रभाव प्रयाग। न्याय दान दीन्हे द्विजन प्रीति सहित अनुराग॥ प्रीति सहित अनुराग दर्शसुख सबहिन पाये। दुख सुख सबको देत आप ऋषिआश्रम आये॥ आश्रम आये सुनत ऋषि भरद्वाज आनद लहित। आसन आदर मुनि करयो राम लषण सीता सहित॥ ६०॥

राम तुम्हारे दर्शते यह फल प्रकट दिखात। नेम प्रेम जप योग तप तीरथ ब्रत दुख गात॥ तीरथ ब्रत दुख गात आजु सब सुफल हमारे। राउर आगम लहत नयन मुख सुखद निहारे॥ सुखद निहारे सुख भयो तीरथ राउर परशते। भयो मोर मङ्गल परम राम तुम्हारे दरशते॥ ६१॥

भोर प्रयाग नहायके राम लषण सिय साथ। चले मनोहर मनहरन वन्दि चरण मुनिनाथ॥ वन्दि चरण मुनिनाथ मदन रति ऋतुपति मानो। ब्रह्म जीवके मध्य लसत माया छवि जानो॥ माया छवि लय देखिधौं उमाशंभु गणनायकै। चले किधौं सुरपति शची भोर जयन्त लिवायकै॥ ६२॥

पथ चरित सिय रामको सबसुख मङ्गलदाय। राम लषण सियदर्शते खग मृग सुखी सुभाय॥ खग मृग सुखी सुभाय परमपदके अधिकारी। कौन लहै सुख सकल सुखद वर वदन निहारी॥ वदन निहारि सप्रेममय भयो पर्म सुख धामको। गिरि तरु खग मृग नारिनर देखि चरित सिय रामको॥ ६२॥

बालमीकिआश्रम गये सिया लषण रघुराय। आये मुनिवर मिलनको भेंटे हृदय लगाय॥ भेंटे हृदय लगाय पूजि परिपूरण कीन्हे। आसन आदर देय फूल फल अङ्कुर दीन्हे॥

अङ्कुर दीन्हे अमिय सम अस्तुति आनँद मन भये। सकल सिद्ध साधन सुफल वाल्मीकि आश्रम गये ॥ ६४ ॥

जाके हित मन गोत्र सित साधत साधन धाम। मोह-मदादिक गुण तजे अहनिशि जागत याम ॥ अहनिशि जागत जाम जापतप योग बिरागे। मानस ब्रह्मणि रूप रहत निशिदिन अनुरागे ॥ निशिदिन अनुरागे रहै ज्ञान ध्यान मन्दिर लहित। सो प्रत्यक्ष मूरति लखो जाके हित मन गोत्र सित ॥ ६५ ॥

राम कह्यो कर जोरिकै मुनिनायक सुनि बैन। आश्रम पावन दीजिये जहां करौं शुचि अयन ॥ जहँा करौं शुचि अयन दिवस कछु तहँा बिताऊँ। जानत कारण सकल कहा कहि प्रकट जनाऊँ ॥ प्रकट जनाऊँ आश्रम न देहु मुनीश निहोरिकै। चलिय कृपा करि देहु मुनि राम कहेउ कर-जोरिकै ॥ ६६ ॥

सुन्दर गिरिगण सरित बन दीख जाय मुनि सङ्ग। कहत महातम पर्म थल देखि होय दुख भङ्ग ॥ देखि होय दुख भङ्ग सुखी खगमृग बनचारी। तरुवर फलित विभाग सुधासम सुन्दर वारी ॥ सुन्दर जल थल निरखि यह चित्रकूट मङ्गल भरित। पावन करिय बिहारथल सुन्दर बन गिरिगण सरित ॥ ६७ ॥

राम लषण आश्रम कर्‍यो चित्रकूट सिय सङ्ग। मनहु विपिन बसि तप करत रति ऋतुराज अनङ्ग ॥ रति ऋतुराज अनङ्ग राम लखि सुख बनचारी। भरि भरि दोना सफल भेट धरि बदन निहारी ॥ बदन निहारि निहारि सब मगन सदन मङ्गल भर्‍यो। विपिन भयो कामद सुखद रामलषण आश्रम कर्‍यो ॥ ६८ ॥

अब सुमन्त्र अवधहि चले राम बिदा जब कीन। हय न

चलहिं रघुबरबिरह सचिव भयो दुख दीन॥ सचिव भयो दुख दीन शिथिल रथ हाँकि न आयो। बिकल बिषाद निहारि अवध केवट पहुँचायो॥ केवट गृह आयो बहुरि साँझ पाय अवसर भले। हानि गलानि बिहाल उर अब सुमन्त अवधहि चले॥ ६९॥

कहु सुमन्त कहँ रामसिय उठे बिकल नरनाह। सचिव हृदय भेटेउ नृपति नयनन नीरप्रबाह। नयनन नीरप्रबाह सचिवसन बोलि न आयो। रामसिया सन्देश सकल मुख कहन न पायो॥ कहन न आयो मुखबचन ब्रह्मरन्ध्रपथ कढ़यो जिय। लखण रामसिय रामसिय कहु सुमन्त कहँ राम-सिय॥ ७०॥

भूपभवन रोदन पर्यो रानी पुर नरनारि। अवधनाथ अथयो मनहुँ रविनिशि अवध निहारि॥ निशि सम अवध निहारि गारि सब कुमतिहि देई।' बिपति वियोग कुयोग कलह दृढ़ दीन्हेसि नेई॥ दीन्हेसि सबकहँ दुसह दुख जेहिके करतब नृप मर्यो। हाय हाय लायो नगर भूप-भवन रोदन पर्यो॥ ७१॥

राखि भूप तन करि यतन कह वशिष्ठ समुझाय। दूत पठाये भरतपहँ आतुर चार बुलाय॥ आतुर चार बुलाय भूप गति प्रकटेहु नाही। गुरू बुलाये भरत बेगि लै गमनहु ताही॥ गवन कीन शिर नाय तब हयगति मारग सुनि वचन। सुनि बुझाय रानी सकल राखि भूपतन करि यतन॥ ७२॥

गुरुसँदेश आये भरत अशकुन नगर नगीच। श्वान शृगाल उलूक खर बोलत अशुभ कुनीच॥ अशुभ कुनीच भरत मति गति थिति नाहीं। भरत देखि नरनारि बाम दाहिन चलि जाहीं॥ बाम आधपुर देखिके दुखज्वरसों

छानी जरति। धरत पावँ डगमग परत गुरुसँदेश आये भरत॥ ७३॥

भषण भाजन साजिके सुन आगमन विचारि। लै आई कैकयसुता सुत आरती उतारि॥ सुत आरती उतारि भाय दोउ भ्रमते भूले। पियो न जल थल बैठि शूलके अङ्कुर शूले॥ अङ्कुर शूल विचारिकै कुशल पूंछि निजराजिकै। बोली सुतदाहक वचन भूषण भाजन साजिकै॥ ७४॥

कुशल राज्य सब काजमैं राख्यों पुत्र सुधारि। भई मन्थरा परमहित दुख दूषण सब जारि॥ दुख दूषण सब जारि राज सब तुम्हते जाग्या। कण्टक भे सब दूरि अगम वर नृपसन माँग्यो॥ अगम सुधारो बात मैं नृप सुरपुर सुखसाजमैं। कछुक बिगारयो विधि यहै कुशल राज्य सब काजमैं॥ ७५॥

रामलषण सिय बन गये मरे भूप तेहि शोच। तुमकहँ राज्यविलास अब कीजे छाँड़ि सकोच॥ कीजे छाँड़ि सकोच होत सब विधिका कीनो। मरन जियन जग रीति लेहु पुर राज्य नवीनो॥ राज्य सुनत व्याकुल गिरयो रोदन करि मुर्च्छित भए। तात तात हा तात कहि रामलषण सिय बन गये॥ ७६॥

परै न कीरा मुहँ जरयो वर माँगत जड़ तोहि। कुमति कठोर न नृप लखो मिथ्या जन्मे मोहि॥ मिथ्या जन्मे मोहि बाँझ तू भई न काहे। ऐसो कुमति कठोर कर्म करि मो उर दाहे॥ दाहे उर खल बचन सुख राम बिपिन-कह मन धरयो। को तू काके रूप धर परै न कीरा मुख जरयो॥ ७७॥

पौतम मारत नहिं डरी बन पठये सियराम। प्रेत पिशाचिनि रूप तू भई कहांको वाम॥ भई कहांकी बाम

राम तोहिं अनहित लागे। जोहसि सो उठि बैठु ओट तजि आँखिन आगे॥ आँखिन आगेते टरै धिक मैं जन्मत्रों जोहि घरो। रामसुवन पठये बनहिं पीतम मारत नहिं डरी॥ ७८॥

आई दुखदायिनि तिया नाम मन्थरा जाहि। भूषण-भार शृँगारि तन रिपुहन लखि चष चाहि॥ रिपुहन लखि चष चाहि दौरि पग कूबर मारयो। परी धरणि धरि केश घसीटत तनक न हारयो॥ तनक न हारयो बीर तब भरत जाय रक्षण किया। उठे त्यागि कुल दाहिनी आई दुख दायिनि तिया॥ ७९॥

उठत कौशला गिरि परीं भरत देखि उठि दौरि। लीन्हे हृदय उठायके आँगन गिरीं बहोरि॥ आँगन गिरीं बहोरि रोय दीन्हों दुहुं भाई। मातु लगाई कण्ठ अश्रु धारा नह-वाई॥ नह वाये चषनीरते बीर भरत धीरज धरी। बिकल भरत समुझावती उठत कौशला गिरिपरी॥ ८०॥

अञ्चल नयन लगायके आँसू पोंछति मात। तोहिं बिना सुत यह दशा उठन न पैयत गात॥ उठन न पैयत गात रामसिय बनहिं सिधाये। पुर परिजन भे बिकल लषण सिय बहु समुझाये॥ बहु समुझाये नहिं रहे राम चले सँग लायके। सुनत भरत जलसों भरे अञ्चल पोंछति धायके॥ ८१॥

मातु जगत जन्मत्रों वृथा भई न कैकयि बाँझ। राम सिया अप्रिय भयो अयशमूल जगमाँझ॥ अयशमूल जगमाँझ जासु हित यह गति तोरी। जन्मत हत्यो न मोहिं देति विषमाहुर घोरी॥ माहुर दै मारत्री जगत कुल कुठारि उपज्यो यथा। न्हपगति यह रघुपति विपिन मातु जगत जन्मत्री वृथा॥ ८२॥

सुर गुरु द्विज पातक परैं जो जानत यह बात। बाल बालबध अघ अयश गाय गोठ पुर घात॥ गाय गोठ पुर घात मीत नृप माहुर दीन्हे। परधन परतियहानि परै अघ गोबध कीन्हे॥ गोबध निंदावेदको पर अपकारी अघ करै। जो जननी जानहुँ तनक सुर गुरु द्विज पातक परै॥ ८३॥

परघर अग्नि लगावहीं कुपथ पन्थ पग देयँ। बल करि तिय परधन हरैं रण भगि अपयश लेयँ॥ रण भगि अपयश लेयँ मातु पितु विप्र न मानैं। हरिहर पदते विमुख भूत प्रेतन उर आनैं॥ उर आनैं तीरथ कुकृत निज कुटुम्ब तृण लावहीं। जो जानौं तौ अघ परैं परघर आगि लगावहीं॥ ८४॥

लोभ मोह फाँसे रहैं साधु सङ्ग नहि लेयँ। मीत विप्र कुल कष्ट लखि अशन नीर नहि देयँ॥ अशन नीर नहि देयँ कूप सर बाग विध्वंसैं। तन पोषक बिन तोष ग्रहत विष धन पर अंसैं॥ पर अंशैं जे नित धरैं कुबचन बोलि छाती दहैं। तिनकी गति विधि देहु जग लोभ मोह फाँसे रहैं॥ ८५॥

ते नर जग ह्वै ते मरैं करैं जन्म भरि पाप। रणमण्डल अपयश लहैं देहिं विप्र गुरु ताप॥ देहिं विप्र गुरु ताप बसत घर लाय उजारैं। सन्तसभा नहि बैठि मृषा मुख वचन उचारैं॥ मृषा साखि जग उचरैं नित्य शारि उठि गृह करैं। रामसिया जेहि प्रिय नहीं ते नर जग होते मरैं॥ ८६॥

तुम सुत शपथ न खाँचियो राम प्राण प्रिय तोहि। तुम रामहि अति प्रिय सदा विधि गति बाँकी होहि॥ विधि गति बाँकी होहि देहु दूषण जनि काहू। कर्म प्रधान किसान ब-

वे लुनियत सोइ लाहू॥ बयो लुनियत जगतमें भूप मरे हम बाँचिये। राम चले प्राण न चले तुम सुत शपथ न खाँचिये॥ ८७॥

बड़े भोर मुनि आयगे बैठेहि रैनि बिहानि। भरत बुझाय बशिष्ठ मुनि भूपक्रिया बिधि आनि॥ भूपक्रिया बिधि आनि दाह सरयूतट दीन्हो। रानिन कैर प्रबोध भरत पाँयन परि कीन्हो॥ पाँयन परि करि कर्म सब तिल अञ्जलि क्रत रायके। भरत सिखाये मृत करम बड़े भोर मुनि आयके॥ ८८॥

हय गय मणि भूषण दये सिंहासन महिसाज। धेनु बसन आयुध चवँरछत्र पात्र शिरताज॥ छत्र पात्र शिरताज स्वमति गति मुनि जस भाषी। श्रुत शत कौन विधान भरत करयो अभिलाषी। करि करतूति प्रमाण जस सब प्रकार बिधिवत भये। शुद्ध सिद्ध करि काज सब हय गय मणि भूषण दये॥ ८९॥

शुद्ध भये मुनिवर गये जहां राजदरबार। नगर महाजन बिप्रजन सचिव सुभट सरदार॥ सचिव सुभट सरदार बोलि पठई सब रानी। भरत शत्रुहन साथ बोलि लीन्हे मुनि ज्ञानी॥ मुनि ज्ञानी बैठारि ढिग मधुर बचन बोलत भये। राजसभा दरबार सब शुद्ध भये मुनि वर गये॥ ९०॥

नृपति प्रेम पूरण कियो तेहिको शोचिय नाहि। जाको यश शशि शर्दको को नहिं देखि सिहाहिं॥ को नहिं देखि सिहाहि भोग सुरपति सम कीन्हो। राम बियोग कृशानु प्राण तेहिं लण धरि दीन्हे॥ राम लषण तुम शत्रुहन चारि सुवन लखि भगजियो। बिछुरि गयो सुरलोक बर नृपति प्रेम पूरण कियो॥ ९१॥

राम स्वभाव सनेहको कहिय कौन विधि गाय। पितु आयसु तुरतहि उठे सब पुरजन समुझाय॥ सब पुरजन समुझाय सिया लषणहि समुझायो। प्राण तजौं यह जानि सङ्ग करि शोचन आयो॥ शोचन आयो भूपको भूपति बचन अछेहको। धर्मशील गुणको कहै रामस्वभाव सनेहको॥ ६२॥

कठिन कैकयी का कहौं कहतहु कही न जाय। कुमति कुआगि बरायके दीन्हो अवध लगाय॥ दीन्हो अवध लगाय राम सिय बनहिं सिधाये। पुर परिजन मन शोच भूप हठि प्राण पठाये॥ प्राण गवाँये भूपबर भावी गतिको नहिं दहौं। विधि विधता अति कठिन है कठिन कैकयी का कहौं॥ ६३॥

भूप बचन प्रिय प्राण नहिं भरत सुनो सतिभाव। सो फुरको जिय शिर धरिम धर्म स्मृति श्रुति गाव॥ धर्म स्मृति श्रुति गाव तजे रघुवर जेहि लागो। मातु सचिव पुर लोग जरत ज्वर नाशहु आगो॥ नाशहु आगो अवधको अवधि लगे नृप राज्य लहि। दोष न कछु मानस करो भूपवचन प्रिय प्राण नहि॥ ६४॥

कहत कौशला पाँय परि पूत सुनहु गुरु बात। भूप मरे रघुपति गये तुम यहि विधि कदरात॥ तुम यहि विधि कदरात अवध उत्पात विचारो। कालकर्म गति वाम कुदिन सुख कीजिय कारो॥ कीजिय गुरु आयसु मुदित पुर परिजन शिर भार धरि। पालि शोच सबको हरो कहत कौशला पाँय परि॥ ६५॥

भरत नयन धारा चली सुनि गुरुजननी बैन। हाथ जोरि बोले मधुर जल उमड़े द्वौ नैन॥ जल उमड़े द्वौ नैन

सोख भलि दीन्ह गोसाईं। मातु कहेउ उपदेश मोहिंपर दया सदाई॥ दया सदाईते कहत सचिव मातु गुरु हित भले। उतर देत पातक लहौं भरत नयन धारा चले॥ ९६॥

पाँयन पनहीं नहिं धरी राम विपिन किय गौन। भूप मरे प्रण पूर करि ताको शोचब कौन॥ ताको शोचब कौन घाव यह तीक्ष्ण लाग्यो। यहै पौर नित दहत रयन भरि शोचन जाग्यो॥ शोचन जाग्यों निशि सबै जाति सबै छाती जरी। राम लषण कटिपट तजे पाँयन पनहीं नहिं धरी॥ ९७॥

प्रातकाल करि हौं यहै सुनहु सत्य सब बात। धर्म जाय जग अयश लहि नरकहु दुख सहिगात॥ नर कहुदुख सहि गात जन्म भरि सङ्कट होई। सब दुख दाँवा दहौं अनल बरु डारहु कोई। डारहु कोय जुवाल ज्वर सकल दोष दुख भरि रहै। जाहूँ अनुजयुत बिपिन कहँ प्रातकाल करि हौं यहै॥ ९८॥

शरण सामुहे देखिके रघुपति करि हैं छोह। शील स्वभाव सुस्वामिको समुहे जनपर मोह॥ समुहे जनपर मोह रामसिय बाम न काहू। मैं शिशु सेवक नीच कुमति उर प्रकटेउँ ताहू॥ प्रकटेउ विधि अघ अयश लै नीच दास शिश लेखिके। रामसिया करि हैं कृपा शरण सामुहे देखिके॥ ९९॥

भरत वचन लखि रबि जगे रामबिरह निशि पाय। भूप-मरण कैकय कुमति तिमिर रहेउ पुर छाय। तिमिर रहेउ पुर छाय मुर्छि सोवत नरनारी। लषण सियाको विरह व्याघ्र वृक गर्जत भारी॥ गर्जत भारी भय बिकल तारागण मुनि द्विज लगे। दुखद सेज सोवत बिकल भरत वचन लखि रबि जगे॥ १००॥

सबके मन सब सुख भयो भरत भलो मत कौन। दुख समुद्र बूड़त सकल जेहि अवलम्बन दीन॥ जेहि अवलम्बन दीन सभा सब उठि भे ठाढ़े। रामचन्द्र सिय दर्श मन्त्र नर बारिधि बाढ़े॥ बारिधि बाढ़े लोग सब भरत मन्त्र सबहो लयो। साजि साजि बाहन चले सबके मन सब सुख भयो॥ १०१॥

भरत साज साजत भये मातु सकल पुरलोग। चले चित्रकूटहि भरत कृश तन रामवियोग॥ कृश तन रामवियोग चले सजि साज समाजे। पाँयर पनहीं त्यागि शीश नहिं भूषण राजे॥ भूषण साजे त्यागिकै भाय मातु सँग सब लये। रामप्रेम पूरण भरे भरत साज साजत भये॥ १०२॥

तमसातीर निवास करि प्रात समाज समेत। सुरसरि देखो जाय तब केवट कहत सचेत॥ केवट कहत सचेत भरत सेना सँग लीन्हे। समुझि निषाद विचारि कपट अन्तरमहँ दीन्हे॥ अन्तर कपट विचारिकै सजग होउ सब घाट धरि। राम जानि वन भरत सजि तमसातीर निवास करि॥ १०३॥

रामकाज जूझहु सुभट भरत रामके भाय। मैं सेवक रघुवीरको लोहे देहुँ अघाय॥ लोहे देहुँ अघाय सुभट बिन कटक निहारो। हय गय रथ जल बोरि पाउँ पीछे जनि धारो॥ पाउँ न पीछे कोउ धरहु राम राज अरु गङ्गतट। मोर निहोर विचारिकै स्वामि काज जूझहु सुभट॥ १०४॥

पहिरत अगरी धनु धरत भई छींक गति बाम। सगुन सगुनिया कहि चल्यो सगुन सुमङ्गलधाम॥ सगुन सुमङ्गल-धाम भरत नहिं कपट कुचाली। राम मनावन जाहिं सङ्ग ले मातु सुचाली॥ सङ्ग मातु गुरु सचिव सब लोग राम

शोचनि जरत। सहसा कर्म न कोजिये पहिरत अगरी धनु धरत ॥ १०५ ॥

समुझि भेट नृप लै चले खग मृग धन पट मीन। मिलन साज सब सङ्ग लिय पुरजन परम प्रवीन॥ पुरजन परम प्रवीन मिल्यो मुनिबरकहँ आगे। रामसखा सुनि भरत चले मिलनै रथ त्यागे॥ रथ त्यागि केवट कह्यो नाम जाति पुर जन भले। भरत चल्यो उमँगत नयन समुझि भेटि नृप लै चले ॥ १०६ ॥

भरत कुशल पूँछो सबै केवट बिनती कीन्ह। अब पद रज लखि कुशल सब प्रभु दर्शन जब दीन्ह ॥ प्रभुदर्शनके लहत सकल दुख दूरि पराने। चलिये अपने पुरहि राम जस सेवक जाने॥ सेवक कहेउ पुकारि मैं मातुनि लखि सादर जबै। दै अशीष जनु लषण सम हेतु कुशल पूछो सबै ॥ १०७ ॥

सब सुपास सबको भयो सुरसरि भरत अन्हाय। राम-सखा सेवा करी सबको बास दिवाय॥ सबको बास दिवाय रयनि सब तहाँ गवाँई। एकहि खेवा पार किये केवट उतराई॥ उतराई सब सैनयुत चले प्राग मारग लियो। रामदर्श लालच हृदय सब सुपास सबको भयो॥ १०८॥

न्हाय प्रयाग प्रणाम करि दान दीन सुख पाय। भरद्वाज आश्रम गये मिले पूजि बैठाय॥ मिले पूजि बैठाय कह्यो हम सब सुधि पाई। कसन करहु यह भरत प्राणसम प्रिय रघुराई॥ प्राण समान सनेह पद तजि गलानि जनि हृदय धरि। निशि ऋषि कीन सुपास सब प्रात नहाय प्रणाम करि ॥ १०९ ॥

रामनाम रसना ललित ध्यान राम सियरूप। श्रवण कथा रघुपति सगुण हृदय चरित अनूप॥ हृदय चरित

अनूप परत पग मग दृग डोलैं। शिथिल सनेह गँभीर राम सिय मुख भरि बोलैं॥ मुख भरि बोलैं रामसिय पथ्य अपथ्यहु निश्चलित। बर्षत सुर जय जय कहत रामनाम रसना ललित॥ ११०॥

सुन्दर बन गिरि गण मुदित मृग विहङ्ग कपि भाल। प्रमुदित प्रजा समाज सब राजा सुखद सुकाल॥ राजा सुखद सुकाल सकल तरु फल सुखदायक। सुधा सरिस सरिबारि कर्म अघ औगुणखायक॥ औगुण छल दल दपट दूरि कपट द्विरद केहरि विदित। केवट भरत बताइयो सुन्दर बन गिरिगण मुदित॥ १११॥

नाथ बिटप बट तरु तरे कीन छावनी राम। सिया बनाई वेदिका निज कर ललित ललाम॥ निज कर ललित ललाम राम शुभ आश्रम नीको। मुनिगण कहत पुराण सुनत दिनकरकुलटीको॥ दिनकरकुलमण्डन महो दुख खण्डव कहि जय हरे। रामसिया लक्ष्मण लखो नाथ बिटप तरु बट तरे॥ ११२॥

जाय भरत पाँयन परे त्राहि त्राहि भगवन्त। अशरणशरण प्रताप जग आदि मध्य नहिं अन्त॥ आदि मध्य नहिं अन्त प्रणत जनरक्षक स्वामी। शील स्वभाव बिचारि शरण पद रज अनुगामी॥ अनुगामी शिशु औगुणी धाय आनि प्रभु पद धरे। त्राहि त्राहि रक्षक प्रभो जाय भरत पाँयन परे॥ ११३॥

भरत प्रेम रघुबर शिथिल उठे शरीर बिसारि। धनुष तीर पट शिर मुकुट जटा दये छिटकारि॥ जटा मुकुट छिटकारि नयन उमँगे जल धारा। दुहुँ कर लियो उठाय मगन नहिं देह सँभारा॥ देह सँभार विचार तजि भाय लाय

उरमें बिकल। देखि दशासुरगण त्रसित भरत प्रेम रघुबर शिथिल ॥ ११४ ॥

छोड़ि न भावत शिथिल दोउ भाय प्रेम परिपूरि। मन बुधि चित हित लायके करि कुतर्क सब दूरि॥ करि कुतर्क सब दूरि राम पुनि केवट भेटे। लषण भरत पुनि मिले शत्-हन उर दुख मेटे॥ मेटि दुसह उर दाह दुख भरत शीश पद धरे दोउ। सकल सभा मुनिगण मगन छोड़ि न भावत मगन दोउ ॥ ११५ ॥

केवट गुरु आगमन कहि राम उठे सब सङ्ग। धरे जाय मुनिपदकमल भेंटे मुनि धरि अङ्ग॥ भेंटे मुनि धरि अङ्ग चले आश्रमहि लिवाई। मातन भेंटे आय मनहु शिशुधेनु तुराई ॥ धेनु तुराई गति मिली सिय सासुनके चरण गहि। रोदन करत बिलाप करि केवट गुरु नृपमरण कहि ॥ ११६ ॥

भये शुद्ध मुनि वचन कहि भरत राम सब भाय। सब समाज करुणा हरष मातु सचिव ऋषिराय॥ मातु सचिव ऋषिराय भरत विनती उठि कीन्हो। श्रीरघुवर सर्वज्ञ सकल गति मति रति चीन्हो॥ मति गति चीन्हि सनेह सब अवश करिय सोइ आजु लहि। चलिय अवध नृपता करिय भये शुद्ध मुनि बचन कहि ॥ ११७ ॥

आयसु नृप बनको दयो सोई धरि शिर आज। तुमको पितु पुरको दयो पूरण राज समाज॥ पूरण राज समाज हमहुँ तुम आयसु कीजै। पालिय पितुको बैन जन्म अभिमत फल लीजै॥ अभिमत फलति न जग लह्यो पितुआयसु जिन शिर लयो। बचन न खण्डित सो करौ आयसु नृप बनको दयो ॥ ११८ ॥

जो श्रुति कहत सुसत्य है भरत कहत कर जोरि। पितु आयसु शिर राखिये परमधर्म शत कोरि॥ परमधर्म शत

कोरि तदपि पितु तियवश होई। सन्निपात अतिवात वारुणी सेवत सोई॥ सेवत सोई रोगवश वचन कुयोग अपत्य है। समुझि नाथ कीजै उचित जो श्रुति कहै सो सत्य है॥ ११६॥

प्रभुरुख लखि मन प्रण कियो गये गङ्गके तीर। जल उठाय सङ्कल्प करि जो न चलैं रघुबीर॥ जो न चलैं रघुवीर देह तृणसम तजि डारो। तन मन अर्पित देखि गङ्गतिय वेष सुधारो॥ वेष सुधारी एक मुख ढिग उपदेश सुधारियो। सुनु बिबेक रामानुजे प्रभुरुख लखि प्रणमन कियो॥ १२०॥

सत्य सच्चिदानन्द हरि राम सकल सुर ईश। ताहि न सुत भ्राता गनौ सर्वोपरि जगदीश॥ सर्वोपरि जगदीश शम्भु विधि हरिकारण कर। पद पताल शिर गगन लोक कर उर गिरि सरवर॥ गिरि सरवर धर अङ्ग सब भरण हरण थिति पूरि भरि। हठन करो आयसु धरो ब्रह्म सच्चिदानन्द हरि॥ १२१॥

जन पालन खलगण दहन चले बिपिन सुरकाज। महीदेव श्रुति द्विज बिकल मुनिपालन तपसाज॥ मुनिपालन तपसाज जात दश कण्ठहि मारैं। करि प्रमाण निज कर्म अवधपुर तिलक सुधारैं॥ तिलक राज लीला करहि मही मोद सुख निर्बहन। उठहु राम आयसु करौ सुरपालन खलगण दहन॥ १२२॥

शुभ आनन सुनिकै भरत मगन भये सुख वन्द। भई अदृष्टि अशीश दै श्रवण सुधा शुभ छन्द॥ श्रवण सुधा शुभ छन्द भरत आनन्द सिधाये। श्रीरघुवरपदकमल प्रेम धरि शीश नवाये॥ शीश नाथ बिनती करी देहु पादुका शिर धरत। करत अटन तीरथ बिपिन शुभ आनन सुनि सिख भरत॥ १२३॥

मगन समाज समेत सो चित्रकूट बन देखि। सुखद राम बर बदन लखि जीवन सफल विशेषि॥ जीवन सफल विशेषि भरत श्रीराम बुलाये। बिदाहेतु गुरु बचन कहे सबकहँ समुझाये॥ सब प्रबोध भेंटे मिले चले समाज सनेहसों। अवधि आश पुर बास करि मगन समाज सनेहसों॥ १२४॥

राम भरतके प्रेमको को कविबरणत पार। नेम क्रिया दृढ़ धर्म्मब्रत कर्म्म परम आचार॥ कर्म परम आचार वरणि सहसानन हारे। मति जड़ बरणहिं काह मसक नभ अन्त विचारे॥ मशक अन्त किमि पावई गगन उड़े करि नेमको। तुलसिदास शठ क्यों कहे राम भरतके प्रेमको॥ १२५॥

बसे अवधपुर लोग सब भरत बसे पुर त्यागि। नन्दि-ग्राम खनि अवनि थल ब्रत मुनि निशि दिन जागि॥ निशि दिन मुनि ब्रत साधि पादुका नृप करि सेवै। राज-काज शुभ साज करत पूजत द्विज देवै॥ देव मनावत अवधिहित राम समागम होय कब। तुलसिदास मुनि ब्रत धरे बसे अवधपुर लोग सब॥ १२६॥

इति अयोध्याकाण्डं
समाप्तम् २॥

अथारण्यकाण्डप्रारम्भः ॥

फटिकशिला सुन्दर सुखद बैठे सिय रघुबीर। सुमन लषण आनहिं सुभग सुरभित सुमुख समीर॥ सुरभित सुमुख समीर राम सिय भूषण साजे। अङ्ग अङ्ग प्रति रुचिर कामरति लखि छबि लाजे॥ लखि लाजे रति काम तन इन्द्र-सुवन भरमैं दुखद। परब्रह्म श्रीराम सिय फटिकशिला सुन्दर सुखद॥ १॥

समुझि मनुज अवगुण कस्यो हत्यो चोंच तन काग। रुधिर देखि शर सुमनको कीन्ह क्रोध करि त्याग॥ कीन्ह क्रोधकर त्याग लोक लोकन भ्रमि आयो। मति गति विह्वल विकल मोह माया भरमायो॥ मोहअन्ध नारद लख्यो पाय सोख पायँन पस्यो। त्राहि त्राहि रक्षा करो समुझि मनुज अवगुण कस्यो॥ २॥

एक आँखि करि प्रभु तज्यो कर्म कीन बड़ छोर। कृपा-निधान समानको प्रणतपाल बरजोर॥ प्रणतपाल बर-जोर चरित सुर नर मुनि गावैं। चित्रकूट बस सुखद जानि सब आश्रम आवैं॥ आश्रम विदित विचारिकै विपिनसाज सब तन सज्यो। अत्रि जहाँ आश्रम गये चित्रकूटथल प्रभु तज्यो॥३॥

ऋषि अनन्द भेंटत भये देखि लषण सिय राम। आसन बैठारे मुदित पूजे अभिमतकाम॥ पूजे अभिमतकाम जानकी लेन लाई। अनसूया पट दीन नित्य नूतन सुख-

दाई॥ सुखदायन उपदेश दें पतिव्रत धर्मनि सब दये। आदर अस्तुति मुनि करो ऋषि अनन्द भेंटत भये॥ ४॥

बिदा अत्रिसों प्रभु भये सिया लषण रघुराय। चले विपिन आगे सुखद महामुदित मन पाय॥ महामुदित मन पाय सकल मुनि भये सुखारी। निर्भय जप तप करहिं योग मखहोम बिचारी॥ होम विचारि सँभारि हरि आशिष आदरसों दयो। मङ्गलमय कानन भयो बिदा अत्रिसों प्रभु भयो॥ ५॥

बधि विराध मग सुख भये देखि जाय सरभङ्ग। परिपूरण लखि रामछवि प्रेम प्रफुल्लित अङ्ग॥ प्रेम प्रफुल्लित अङ्ग जोरि हर विनय बड़ाई। करि निहोर रचि चिता अग्नि चढ़ि दौन लगाई॥ दौन अग्नि तन अर्पिके राम लषण सिय उर लये। गयो धाम श्रीराम लखि बधि विराध मग सुख भये॥ ६॥

मिले सुतीक्षण धायके पुलकनयन जलधार। जेहि विधि शिव योगीश मुनि ध्यावत हृदि आगार॥ हृदि मन्दिर ध्यावत सदा आये तेबन आजु हैं। देखौं नयन सनेह भरि मूरति सुख रघुराज हैं॥ अन्तर्यामी धारि मन मूरति नेह लगायके। राम जगाये प्रेम परि मिले सुतीक्षण धायके॥ ७॥

सङ्ग गयो मगमें चल्यो जात लखत प्रभु रूप। ऋषि अगस्ति आश्रम गये हर्षि सकल सुर भूप॥ हर्षि देखि सुर भूप मिले मुनि भाग बखान्यो। आसन आदर पूजि वेद प्रति मति प्रभु जान्यो॥ जान ठानि सुख मानि प्रभु मधुर वचस बोल्यो भल्यो। शुभ अस्थान बताइये सङ्ग गयो मगमें चल्यो॥ ८॥

शुभ गोदावरि सरितवर सुन्दर बट सुखधाम। पञ्चवटी आश्रम करिय अति पावन श्रीराम॥ अति पावन श्रीराम हर्षि मुनिराज बताई। शुभ थल तरु मग देखि कुटी मङ्गलमय छाई॥ मङ्गलमय कल्याणथल राम लषण सिय शुभ चरित। कहत ज्ञान वैराग्य जनु शुभ गोदावरि वर सरित॥ ६॥

ज्ञान भक्ति वैराग्य जनु की विधितिथ सुत आप। महादेव गिरिजा गणप लीन्हे कर शर चाप॥ लीन्हे कर शर चाप मदन रति ऋतुपति तीनो। परमारथ अरु योग प्रीति जनु नर तन कीनो॥ नरतन कीनो बीररस शान्त और शृङ्गार भनु। कमठ शेष सरधेनुकी ज्ञान भक्ति वैराग्य जनु॥ १०

मन मोह्यो मुख कलि वचन शूर्पनखा लखि राम। मदनबाण उरमें लगो सुनहु कुँवर घनश्याम॥ सुनहु कुँवर घनश्याम मोहि दासी अब कीजे। हौं कुमारि छविधाम भगिनि रावण गनि लीजे॥ रावण भगिनी जानिके रमो सङ्ग करिके सदन। सुख सम्पति सिधि पाइ हौ मन मोह्यो मुख कहि वचन॥ ११॥

सत्य कही बाणी मृदुल गजगामिनी विचारि। लषण कुमारे विनतिया मेरे संग यह नारि॥ मेरे सँग सुनि नारि लषणकी ओर सिधाई। लच्छण कह्यो सक्रोध लाज तोहि तनक न आई॥ तन मन लाज न तोहि कछु करति निलज औरेहि सकुल। गई रामपहँ क्रोध करि सत्य कही बाणी मृदुल॥ १२॥

हास्य समुझि धावत भई रामवचन चित चाहि। धरे रूप व्यंकट विकट सभय सिया मनमाहि॥ सभय सिया मनमाहि राम कहि लषण निहारे। लच्छण लाघव कान नासिका काटि निवारे। काटि निवारे अङ्ग शुभ अशुभ

अमङ्गल मुखमई। खरदूषण पहँ गय विकल हास समुझि अवत भई १३॥

करि प्रवोध सेना सजौ खरदूषण मन क्रोध। राम बुझाये लषणको सिय गिरि राखिय शोध॥ सिय गिरि राखो शोधि दनुजसेना यह आई। भानुयान छपि गये धूरि नभमण्डल छाई॥ छाय धूरि नभमें रही दुन्दुभि दीरघ अति बजौ। सौतहि राखौ कन्दरा करि प्रवोध सेना सजौ॥ १४॥

धरहु धाय बोले वचन लखि छवि दूत पठाय। नारि अग्र करि मिलहु नृप कहे दूत यह आय॥ कहे दूत यह आय राम तेहि उत्तर दीन्हो। सुनि खरदूषण क्रोध सुभट लै दर्पित कीन्हो॥ दर्पित डारहिं अत बहु धरि सशूल असि शक्ति घन। मनहु मेघ बर्षत अचल धरहु धाय बोले वचन॥ १५॥

राम साजि शारङ्ग शर चले विशिख जनु व्याल। कटे विकट खल उर चरण भुज महि गिरहिं कपाल॥ भुज महि गिरहिं कपाल विकल भाजहिं लखि शायक। खलदल सभय सशोक निरखि खरदूषण धायक॥ धाय क्रोधि शायक तजे रहे पूरि दिशि गगन धर। सजि पावकशर जारि तम राम साजि शारङ्ग शर॥ १६॥

खलदल बृन्द निहारिकै प्रभु मन कीन विचार। रामरूप कीनो कटक सब लरि मर्‍यो अपार॥ सब लरि मर्‍यो अपार एक एकन धरि मारैं। कौतुक लखि सुर मगन रामको चरित निहारैं॥ चरित निहारि पुकारि सुर बर्षि प्रसून सुधारिकै। जय जय जय महिभारहर खलदल मरन निहारिकै॥ १७॥

खरदूषण त्रिशिरा परे शूर्पणखा लखि नैन। रोवत रावणकी सभा कहि कहि आरत वैन॥ कहि कहि आरत वैन देशको सुरति बिसारी। शिर अरि डेरा करयो खबर

नहिं तोहिं सुरारी॥ खबरि न तोहिं निहारु मोहिं अङ्ग सकल शोणित भरे। जुरे जाय भ्राता समर खरदूषण त्रिशिरा परे॥ १८॥

ताहि सङ्ग बरभामिनी रतिरम्भाछवि छीन। रमा भारती शिवतिया लागहिं सकल मलीन॥ लागहिं सकल मलीन कोटि शशिसम द्युति शोभा। खग मृग पशु जड़ जीव वाहि लखि विकल न को भा॥ विकल नारि नर मुनि मगन तजत योग जप यामिनी। दामिनि बरणत द्युति कहाँ ताहि सङ्ग बरभामिनी॥ १९॥

अवनि असुर खण्डित करैं प्रबल शत्रु बरिबण्ड। देखत बालक काल सम अति बिशाल भुजदण्ड॥ अति बिशाल भुजदण्ड मदन जनु वेष सँवारे। मुनि मन भये अनन्द विपिन विचरत भय डारे॥ भय डारे मुनि जय करहिं खल-दल दलि सुर दुख हरैं। भूपकुमार अपार छवि अवनि असुर खण्डित करैं॥ २०॥

करि प्रबोध रथ चढ़ि चल्यो रावण मन अनुमानि। जहँ मारीचस्थान शुभ मन्त्र तन्त्र मन ठानि॥ मन्त्र तन्त्र मन ठानि गयो उठि आदर कीन्हो। मारीचहु मन लख्यो कछू स्वारथ मन दीन्हो॥ स्वारथ घातै बिचारि जिमि अङ्कुश धनु अहि छल छल्यो। नवै बिलारि विचारि छल करि प्रबोध रथ चढ़ि चल्यो॥ २१॥

तात हेतु स्वारथ करी कथा समस्त सुनाय। हरहुँ बाम नृप तनयकी बैर सकल बुझि जाय॥ बैर सकल बुझि जाय होउ मृगकपट बनाई। भगिनी लखि दुख मोहि करहु बन मोरि सहाई॥ मोरि सहाय बिचारिकै निज कुल मङ्गल मन धरी। बात जात घातक भयो तात हेतु स्वारथ करी॥ २२॥

सुनु सुत याहि न नर गनौ मैं जानत बल ताहि। बिन-फरशर मोहिं मारियो गयो समुद निरवाहि॥ गयो समुद निरवाहि मारि ताड़का सुबाहौ। भञ्जो शिवको दण्ड जनक-कन्यका बिवाहौ॥ जनकसमाज नृपाल बहु मान मर्दि भृगु-पति हनौ। ताहि बिरोध न कुशल है सुनु सुत ताहि न नर गनौ॥ २३॥

ज्ञान सिखावत मोहिंकहँ मैं सुर नर बश कौन। उत्तर देहि न उठि चले डरडरात पुरतौन॥ डरडरात पुरतौन समुझि मन देखि बिचारौ। यहि मारे थल नरक राम कर सुरपद भारौ॥ सुरपद भारौ पाय हौं चल्यो नाय शिर राम तहँ। रावण आतुर चढ़ि चल्यो ज्ञान शिखावत मोहि-कहँ॥ २४॥

मायामय छाया करौ सिय आयसु उर मानि। मृग देख्यो शुचि हेममय खचित रतन मणिखानि॥ खचित रतन मणि-खानि लखत जानकी सुखारौ। यहि हति सुन्दर छाल करिय प्रभु धनुशरधारौ॥ धनुशरधारौ मन समुझि जानत आगमकी घरी। चले लषण सिय सौंपिकै मायामय छाया करी॥ २५॥

मृग मारयो दूरौ निकरि राम कठिन शर तानि। हा लक्ष्मण प्रथमै कह्यो पौछे राम बखानि॥ पौछे राम बखानि कहत जानकी बिचारौ। कही लषणसों बात भाय तव सङ्कट भारौ॥ सङ्कटवश सुमिरत तुम्है जाहु तुरत धनुबाण धरि। असुरसैन्य अरिदल ग्रसे मृग मारयो दूरौ नि-करि॥ २६॥

राम न सङ्कट कहुँ परै काल जुरै रणमाहिं। सकल सुरा-सुर लरि मरैं समर जीति हैं नाहिं॥ समर जीति हैं नाहिं

शोच मनमांझ निवारो। राम दीनता बचन बदन कबहूँ न उचारो॥ कबहुं न संशय आनिये सत्य बचन मेरे धरौ। छली वेष निशिचर बिपिन राम कबहुं सङ्कट परौ॥ २७॥

कह्यो बचन सहि नहिं गयो उठ्यो रेख धनु खाँचि। यती-वेष दशकण्ठ शठ आयो सियढिग याँचि॥ आयो सिय-ढिग याँचि जानकी ताहि बुलायो। देन लागि फल मूल दुष्ट तब बचन सुनायो॥ बचन सुनाय सुखद कहि बँधौ भीख नहि कहुँ लयो। भावीवश सिय रेख तजि बचन कह्यो नहिं सहि गयो॥ २८॥

रेख त्यागि सिय जब गई रथपर लई चढ़ाय। गल्यो गगन भयते मगन इत उत देखत जाय॥ इत उत देखत जाय सिया रावण जब जान्यो। कहत पुकारि कृपाल नाथ कहुँ दूरि परान्यो॥ दूरि परान्यो लषण कहँ मोहिं दशानन हरि लई। परी बिवश दशकण्ठके रेख त्यागि जब सिय गई॥ २९॥

राम राम कहि खग चल्यो गृध्र जटायू देखि। रोक्यो रथ रघुबरतिया दशशिर हरी बिशेखि॥ दशशिर हरी बिशेषि मारि रथ भूतल डार्यो। सौतहि लई छुड़ाय बिकल दशशिर महि पार्यो॥ दशशिर पार्यो भूमितल छत्र चूर उर थल हल्यो। मुकुट अस्त्र शस्त्रहि दपट राम राम सुनि खग चल्यो॥ ३०॥

अति रिस रावण रण रच्यो तीक्षण काढ़ि कृपान। दल्यो पक्षमहि खग गिर्यो कहि सुख कृपानिधान॥ कहि सुख कृपानिधान साजि स्यन्दन सिय लीन्हो। लै नभपथ फिरि चल्यो गीध बिह्वल गति कीन्हो॥ बिह्वल गति कपि सिय

लखे नूपुर दै कपि कर सच्यो। तरु अशोकतर राखिक अति बिस रावण फिरि रच्यो ॥ ३१ ॥

लषण बात नीकीं नहीं बन सिय आये त्यागि। असगुन मम मन होत अति सिय बिन उर बिरहागि॥ सिय बिन उर बिरहागि लषण पद गहि समुझाये। शोचत आश्रम देखि नयन उमड़े जल छाये॥ उमड़े जल छाये बिकल खोजत गिरि वन सर मही। रुधिर धनुष आगे पत्यो लषण बात नीकी नहीं ॥ ३२ ॥

राम राम रसना रटै लख्यो गीधपति जाय। कही कथा सिय हेतु गति रामनयन जल छाय॥ रामनयन जल छाय गोद धरि बचन उचारे। परमारथ तुम तात प्राणधन तृण करि डारे॥ तृण समान प्राणनि दयो कोपरहित रण-महँ कटै। जियौ भोग भोगो जगत राम राम रसना रटै॥ ३३ ॥

दर्शलागि जीवन रहेउ भाग उदय रघुराय। जेहि बिरञ्चि शिव सेवहीं लियो गोदमोहि आय॥ लियो गोद मोहि आय राम कहि प्राण गंवाये। भयो तुरत हरिरूप चारि भुज अस्त्र सुहाये॥ अस्त्र सबै शिर मुकुट वर पीताम्बर भूषण गहेउ। जोरि पाणि अस्तुति करत दर्शलागि जीवन रहेउ ॥ ३४ ॥

परमधाम गो गीधपति क्रिया कीन्ह श्रीराम। चले बिरहअङ्कुर भये बिपिन शबरीधाम॥ बिपिन शबरीधाम अर्घ आसन सब साजे। धूप दीप फल सुजल धरे रघुपति-के काजे॥ सब सप्रेम पायन परी दर्श पाय पावै न गति। राम तुम्हारे रूप लखि परमधाम गो गीधपति ॥ ३५ ॥

काठ साजि रचिके चिता सिय सुधि कही बहोरि।

शबरी जरि सुरगति गई क्रिया करी प्रभु कोरि॥ क्रिया करी प्रभु कोरि चले बन दूनौ भाई। मुनिगण मिलत अनेक दर्श अभिमतफल पाई॥ पावहि अभिमत जीव जड़ करहि योग जेहि प्रभु निता। साजि साजि सुरगति लही काठ शबरी रचि चिता॥ ३६॥

रामसिया खोजत गये पम्पा सुभग तड़ाग। सुन्दर जल तरु बिहँग मृग मुनिगण सदन सुबाग॥ मुनिगण सदन सुबाग करत जप तप मन लाई। देखि सरोवर मुदित कीन मज्जन रघुराई॥ रघुराई मज्जन करयो नारद मुनि आवत भये। तुलसिदास सुर सुभग सर रामसिया खोजत गये॥ ३७॥

इति अरण्यकाण्ड समाप्तः॥

अथ किष्किन्धाकाण्ड प्रारम्भ।

चले बिपिन लछमण सहित मिले पवनसुत आय। विप्र रूप पूछत भयो को तुम कहो बुझाय॥ को तुम कहो बुझाय बिपिन सुकुमार सलोने। नृप दशरथके सुवन तासु आयसु तजि भौने॥ तजेउ भवन आये विपिन नारि गई शोध न लहत। खोजत हम द्विज कवन तुम चले बिपिन लछमण सहित॥ १॥

लै सुग्रीव मिलाइयो प्रभु गुण मन अनुमानि। कह्यो कथा सब परस्पर नूपुर दये बखानि॥ नूपुर दये बखानि राम लोचन भरि आये। विरह बिकल प्रभु देखि कोश बहु बिधि समुझाये॥ समुझाये सुग्रीव अति राम लषण सुख पाइयो। प्रभु भेंटे हनुमन्त उर लै सुग्रीव मिलाइयो॥ २॥

प्रभु बोले कारण कवन बसत बिपिन कपिराज। कथा कह्यो सब बालिकी कोपि कहा रघुराज॥ कोपि कहा रघुराज बालि एकहि शर मारौं। सम्पति ऋधि तिय सहित तोहिं कपि तिलक सँवारौं॥ तिलक सँवारौं कालहि नहिं किष्किन्धा न्रपता भवन। तौ न धनुष शर कर धरौं मित्र करिय कारण कवन॥ ३॥

तब सुग्रीव दिखाइयो बालि महा बल बीर। गर्जि नगर जान्यो सबहि चल्यो क्रोधि रणधीर॥ चल्यो क्रोधि रणधीर लरे पुनि दूनौ भाई। शरणागत प्रण समुझि बाण मार्‍यो रघुराई॥ मार्‍यो बाण प्रमाण करि गिर्‍यो अवनि मुरझाइयो। रामरूप लोचन पुलकि तव सुग्रीव दिखाइयो॥ ४॥

श्याम रामछबि उर धरी बाणी कहत कठोर। नर गति हरि गति तजि दई सम प्रकाश सब ठौर॥ सम प्रकाश सब ठौर जगत अप्रिय कछु नाहीं। जो अप्रिय तव होय सकल इक सङ्ग बिलाहीं॥ सङ्ग रङ्ग नहिं चाहिये बिधि पिपील रचना करी। जयति हरे श्रीराम कहि श्याम रामछबि उर धरी॥ ५॥

प्राण गये श्रीराम कहि नारि बिकल पुरलोग। सुग्रीवहि आयसु दयो करहु मृतककर योग॥ करहु मृतककर योग लषण सबको समुझायो। राज हेतु सुग्रीव अनुज सँग नगर पठायो॥ नगर बुलाये द्विज सकल अङ्गदादिकपि बोध

लहि। बालिशोच दूषण हरो प्राण गये श्रीराम कहि ॥ ६ ॥

रामनाम कहि नृप करो तिलक सारि शिरताज। राम कृपानिधि जगतमें बिरद गरीबनिवाज॥ बिरद गरीब-निवाज कियो सुग्रीव सुखारो। गिरिबन बिकल बिहाल बालि डर कम्पित भारो॥ कम्पित डर निरभय नहीं जात दुसह ज्वर उर जरयो। धाम बाम नृप यामको रामनाम कहि नृप करयो ॥ ७ ॥

राजनीति कहि प्रभु रहे शैलप्रवर्षण आय। अनुज सहित सुन्दर सदन राखे देव बनाय॥ राखे देव बनाय निरखि वर्षाऋतु आई। घनघमण्ड नभ घोरं मनहु रविपर निशि धाई॥ निशि धाई रवि भजि गये नीरबुन्द बाणन गहे। तड़ित कृपाण सुइन्द्रधनु राजनीति कहि प्रभु रहे ॥ ८ ॥

करि मनोज डेरा जगत सजि आयो करि सैन। असित पीत सित घन अरुण तनि बितान सुखचैन॥ तनि बितान सुख चैन तड़ित ध्वज सुन्दर राजै। निशि दिन घन घहरात मनहु बग दुन्दुभि बाजै॥ दुन्दुभि बाजे मोर पिक बक दादुर बन्दी लगत। बिरहवन्त कारण सज्यो करि मनोज डेरा जगत ॥ ९ ॥

सुरपतिके गिरिगण ग्रसे बुन्दबाण झरिलाय। कहुँ कहुँ मारत बज्रशर घनगज शीश चढ़ाय॥ घनगज शीश चढ़ाय मोर हर बल पुर आये। बाजे नौबति जीति कोकिला सुयश सुनाये॥ सुयश जनाव बितान तनि बेलि बिटप गृह गिरि बसे। मुद्रित करि पाषाण जड़ सुरपतिके गिरिगण ग्रसे ॥ १० ॥

कै समुद्र महिपर चढ़यो महि मुद्रित करि दीन। सर सरिता जलदल परे शरपञ्जर महि कीन॥ शरपञ्जर महि

कौन तड़ित बड़वागिनि मानो। बर्षत नभ चढ़िबारि असित गिरि दिग्गज जानो॥ दिग्गज कम्पहि घन सदल नाद बाद दशदिशि बढ़्यो। कम्पमान महि गहि धरी के समुद्र महिपर चढ़्यो॥ ११॥

शरदभूप आयो मिलन धवल रूप द्युति साजि। कमल कोक खञ्जन चतुर दूत उठे जग बाजि॥ दूत उठे जग बाजि चन्द्र जनु छत्र सुहायो। सरि सर निर्मल बारि पाँवड़े पावस नायो॥ पावस दीन्हो तिलक जग शरदराज राजत थलन। पावस गयो प्रणाम करि शरदभूप आयो मिलन॥ १२॥

सीय शोध अब लीजिये जाहु जहाँ कपिराज। खबरि बिसारी सुख सुपुर पाय नारि धन राज॥ पाय नारि धन राज बालि थल तुम्हैं पठाऊं। कर धरि कीनो सखा ज्ञान दै मन समुझाऊँ॥ मन समुझाय समेत कपि आप गमन पुर कीजिये। बानर भालु पठाय करि सियाशोध अब लीजिये॥ १३॥

लक्ष्मण चले लिवायके प्रीति प्रबोध रिसाय। बानर भालु बुलायके गये जहां रघुराय॥ गये जहां रघुराय मिले पाँयन कपि नाये। रघुपति हँसि मृदु प्रकृति पुलकि गहि कण्ठ लगाये॥ कण्ठ लगाय बुझाय कपि बिनय करी चित लायके। बानर भालु बिशाल भट लक्ष्मण चले लिवायके॥ १४

कपि लक्ष्मण सबसों कहेउ सिय सुधि खोजहु जाय। पाख दिवस बिन सुधि लिये हमहिं मिल्यो जनि आय॥ हमहिं मिल्यो जनि आय बहुरि अङ्गदहि बुलाये। तुम मारुत-सुत साथ जाहु दक्षिण शिरनाये॥ दक्षिण सिय शोधहु सुभट भालु नील नल सुख लह्यो। मुँदरी दै हनुमन्तको प्रभु कपि लक्ष्मण सब कह्यो॥ १५॥

चले सुभट व्यङ्कट बिकट खोजत गिरि सर खोह। राम-काज लवलीन मन बिसर्‍यो तनकर छोह॥ बिसर्‍यो तनकर छोह सघन बन जाय भुलाने। तृषावन्त भे बिकल बिना जल सब अकुलाने॥ अकुलाने हनुमन्त लखि चल्यो बबर पैठ्यो सुभट। कथा सुनाई शशि प्रभा चले सुभट व्यङ्कट बिकट ॥ १६ ॥

जल फल खाय प्रणाम करि तेहि पठये जलतीर। सीस प्रेम पहुंचो तहां लक्ष्मण श्री रघुबीर॥ श्रीरघुकुलमणि बीर पठे बदरीबन दीन्हो। कपि सब सागरतीर सीय हित चिन्ता कीन्हो॥ चिन्ता कीन्हो कपिन सब सम्पाती लखि कहत हरि। धन्य जटायू सुभटको जल फल खाय प्रणामकरि॥ १७

सुनि सब कथा प्रणाम करि गये मुदित सम्पाति। भये पच्छ जल दीन शुचि कही पच्छ गति भांति॥ कही पच्छ गति भांति धरहु धीरज सब भाई। पैही सीतहि तबहिं पार सागर जो जाई॥ सागर शत योजन उलधि प्रबल बीर जाइहि जो परि। सो सिय पावहि सत्य सुनि कपि सब कथा प्रणाम करि ॥ १८ ॥

गयो कहत यह गीधपति कपि सब करत बिचार। बहु रत संशय जिय कहैं अङ्गद जातो पार॥ अङ्गद जातो पार कहत ऋच्छेश बड़ाई। नल श्रो नील सकोच जानको कौन दिखाई॥ कौन दिखाई जानको पुनि प्रचारि कह ऋच्छ-पति। कहा समुद हनुमन्त तोहि गयो कहत यह गीध पति ॥ १९ ॥

इति श्रीकिष्किन्धाकाण्ड समाप्तः।

———

अथ सुन्दरकाण्ड प्रारम्भ।

भयो हेमगिरिको शिखर सुनत ऋक्षपति बयन। चढ्यो तमकि भूधर अधर फरकि अरुण करि नयन॥ अरुण नयन भुजदण्ड मसकि भूधर जब चंप्यो। जल पतालको कढ्यो शेषकच्छपपर कम्प्यो। कम्पि शेष शिरनमि गयो कूदि चल्यो बलवन्त फिरि। मारि दुष्ट गिरि परसि पग भयो हेमगिरिको शिखरि॥ १॥

पटकि लङ्किनी बामको पैठ्यो सिय हित बीर। लखी न पुर सिय घर घरन खोजि अमित रणधीर॥ खोजि अमित रणधीर बिभीषण भेद बतायो। गयो बाटिका सिय तहाँ पुनि रावण आयो॥ रावण आयो देखि कपि तरु बैठो विश्रामको। कहे बचन रावण सुने पटकि लङ्किनी बामको॥ २॥

सिय उत्तर ताको दयो गयो सदन मतिमन्द। सिय दुख लखि दे मुद्रिका देखी मारुतनन्द॥ देखी मारुत नन्द जानकी कथा सुनाई। मातु धरिय मन धीर कह्यो निज मुख रघुराई॥ रघुराई आवन चहत कौशकटक दलबल भयो। सुत समान तेरो कटक सिय उत्तर ताको दयो॥ ३॥

राम प्रताप सँभारिकै भयो हेमगिरि रूप। रघुबर कृपा बिचारु तृण होय बज्र अनुरूप॥ होय बज्र अनुरूप सर्पशिशु गरुड़हि मारै। तिमिर खाय शशि रविहि मशक गिरि हेम उखारै॥ मशक सुमेरु उखारही समुद पिपील निवारिकै। जरो जगत खद्योत तव रामप्रताप सँभारिकै॥ ४॥

बूड़ि जायँ खुर कुम्भजौ शेष डारि महिभार। बारि खाय बड़वाअनल शशुचन्द्र शिर डार॥ शशुचन्द्र शिर डारि चारि-मुख सृष्टि नशावै। गिरि सर सागर डारि धरणि तजि धौरज धावो धौरज धरणी उर तजै जलहि मिलै गिलि ह्वै रजौ। रामबाण खल ना बचै बूड़ि जायँ खुर कुम्भजौ ॥ ५ ॥

मातु देहु आयसु मुदित लखौं बाटिका जाय। सुन्दर फल लागे बिटप भोजन करौं अघाय॥ भोजन करौं अघाय जानकी उत्तर दीन्हो। सुत रखवारे प्रबल पवन परवेश न कीन्हो॥ पवन शूर परवेश नहिं लखि न सकहिं रवि शशि उदित। कह कपि यह भय तनक नहिं मातु देहु आयसु मुदित॥ ६ ॥

करि प्रणाम कूद्यो सुभट लग्यो फूल फल खाय। मूल चलावै समुदमहँ रक्षक पहुँचे जाय॥ रक्षक पहुँचे जाय मर्दि महि गर्द मिलाये। पुरी परत्रो अतिशोर अक्ष रावण पठवाये। अक्ष वृक्ष लै कपि हन्यो मेघनाद आयो बिकट। भिरे प्रबल रघुपति सुमिरि करि प्रणाम कूद्यो सुभट॥ ७॥

ब्रह्मबाण कपि साधिकै धरि लै गयो बहोरि। रावण आगे करि दियो कहि कटु बचन करोरि॥ कहि कटु बचन करोरि कह्यो रावण तब बानो। को मर्कट दूत कहां काहि बल फलकर हानी॥ फल दल मूल विध्वंसि करि रण कीन्हो अवराधिकै। कहि कपि तव सुत छल करयो ब्रह्मबाण कर साधिकै॥ ८॥

विधि हरि हर दिगपाल सब व्याल यक्ष गन्धर्व। पितृ प्रेत पशु मनुज जग सचराचर सुर सर्व॥ सचराचर सुर सर्व गगन धरणी गिरि घेरे। मैं तैं पुर परिवार धाम धन तिय सुत तेरे॥ तिय सुत तेरे लोक सब भये रहे पुनि होहिं

अब। तासु दूत जेहि जग सृज्यो विधि हरि हर दिग्पाल सब॥ ६॥

अति रिस पावक बोरिके तेल बस्त्र घृत बोरि। चढ़यो अटारीकनककी विधिशर करते तोरि॥ विधिशर करते तोरि सकल पुर दीन्हो आगो। छण महँ सब पुर बारि बिभीषण भवन न लागो॥ भवन भस्म भूषण भये समुद सुदर्प निवारिके। सिय मणि लै कूदत भयो अति रिस पावक बारिके॥ १०॥

करि प्रबोध साथी सकल मधुबनके फल खाय। हर्षि गहे प्रभुपदकमल उर भेंटे रघुराय॥ उर भेंटे रघुराय दीन्ह मणि प्रभु हँसि लीन्हो। सियदुर्दशा निहारि पवनसुत प्रकटित कीन्हो॥ प्रकटित कीन्हो सियदशा सुनत हाल रघुपति विकल। विजय करिय सिय आनिके करि प्रबोध साथी सकल॥ ११॥

रामबचन कपिदल चल्यो दिग्गज अहि सकुचन्त। भालु बली मर्कट सुभट यूथ यूथ बलवन्त॥ यूथ यूथ बलवन्त अन्त को पावहिं लेखा। राम कटकको विभव रूप जानहिं जिन देखा॥ जिन देखा ते जानहीं नभ अहि पुर भूतल हल्यो। समुद तीर डेरा परे रामबचन सुनि दल चल्यो॥ १२॥

बचन सुनत रावण कह्यो मन्त्री मित्र बुलाय। मन्त्र कह्यो पूछत सबहि कह्यो विभीषण आय॥ कह्यो विभीषण आय मन्त्र मणि मानिय मेरो। सीतहि सौंपहु जाय मिलहु रघुनाथ सबेरो॥ सुनि गुनि उठि लातन हत्यो मिलहि अत को उर दह्यो। चल्यो हृदय अनुमान करि बचन सुनत रावण कह्यो॥ १३॥

मन गलानि हरिहै कवन चल्यो ताकि प्रभु पांय। दीन

बन्धु दाया हृदय लीन्हे तुरत बुलाय॥ लीन्हे तुरत बुलाय तिलक पुनि निज कर सारयो। रावण पुर सब दियो मिल्यो जब शीश उतारयो॥ शीश उतारे शिव दयो तब पाये लङ्का भवन। सो पुर धन पाँथन परत मन गलानि हरि है कवन॥ १४॥

सखा निकट बैठारिके पूछो सागर पाय। केहि बिधि उतरै कपिकटक तेहि बिधि करिय उपाय॥ तेहि बिधि करिय उपाय मन्त्र करि व्रत तट कीन्हो। चुद्र न द्रवहिं विशषि तबहिं प्रभु धनु शर लीन्हो॥ धनु शर उर मारयो बिकल मिल्यो रत्न लै आयके। पन्थ देहि कपिकटककहँ सखा निकट बैठायके॥ १५॥

नाथ सुगम मारग रच्यो जल महि पावक पौन। विटप शैलसर जड़ रचे इनको सिखवत कौन॥ इनको सिखवत कौन करहु प्रभु एक उपाई। गिरिगण बाँधहिं सेतु नील नल दूनहुँ भाई॥ दूनहुँ भाई बाँधि हैं शैल सकल मर्कट सच्यो। आपु प्रताप सहाय मम नाथ सुगम मारग रच्यो॥ १६॥

सुनि साँचे सागर बचन कपिपति कीश बुलाय। धावहु गिरि तरु आनिके नलहि देहु सुख पाय॥ नलहि देहु सुख पाय धरहिं गिरि सागरमाहीं। सुनि आयसु कपिवृन्द चले चहुँ दिशि भ्रम नाहीं॥ भ्रम नहिं शिर वङ्गुल करहिं कोटि कोटि गिरि धरि रचन। देहिं आनि नल नीलकहँ सुनि साँचे सागर बचन॥ १७॥

इति सुन्दराकाण्ड समाप्तः॥

अथ लङ्काकाण्ड प्रारम्भ।

बँधे सेतु मारग भयो चल्यो विपुल कपिसयन। गर्जहिं मर्कट भालु सब आये राजिवनयन॥ आये राजिवनयन मन्दोदरि बहु समुझायो। मृतक न रावण सुनै काल केहि मति न भ्रमायो॥ मति लै अङ्गद पुर चल्यो शुभ उपदेशनको गयो। चेतु चेतु करि हेतु निज बाँधि सेतु मारग भयो॥ १॥

रुण्ड मुण्ड सागर परे रामबाण परचण्ड। मधु मुर बालि बिध्वंसि जेहि खरदूषण बलवण्ड॥ खरदूषण बलवण्ड खण्डि ताड़का सुबाहै। सागर षडरित भयो देखु मारीच कहां है॥ कहांकहां तर्कस परयो बारबार उठि उचरै। मिलो जाय सिय लाय सँग रुण्ड मुण्ड सागर परे॥ २॥

मैं रघुबरको दूत हौं तू निशिचरकुलराय। सेन सहित लागो सुभट सकल उठावो पांय॥ सकल उठावो पांय बचन हारे प्रण रोप्यो। शेषशीशमैं चोट भई अङ्गद जब कोप्यो॥ अङ्गद पांव उखारियो कह रावण भट यूथ हौं। हारे भट रावण उठयो मैं रघुबरको दूत हौं॥ ३॥

मेरु हल्यो पग नहिं हल्यो अस्त हल्यो गिरिश्रृङ्ग। उदयशल कम्पित भयो मन्दर हरगिरि भङ्ग॥ मन्दर हरगिरि भङ्ग सप्त पाताल बिहाले। सप्त समुद्र उच्छलत कमठ दिग्गज दिशि चाले॥ चाले दशकन्धर बदन लङ्कसदन ढहि ढहि चल्यो। थके जके सब दनुज भट मेरु हल्यो पग नहिं हल्यो॥ ४॥

हारि गये दल बल असुर चल्यो बालिसुत बीर। मुकुट धरे प्रभु पाँयतर मिले हर्षि रघुबीर॥ मिले हर्षि रघुबीर बालिसुत कारण भाख्यो। गढ़ घेरयो करि मन्त्र जहाँ लायक तेहि राख्यो॥ राखि बीर पुर भयो दयो लङ्क अति प्रबल जुर। भयो युद्ध क्रुद्धित समर हारि गये दल बल असुर॥ ५॥

मेघनाद योधा सुभट लक्ष्मण हन्यो विचारि। भई मूरछा प्रभु लखे हनुमत लीन प्रचारि॥ हनुमत लीन प्रचारि ओषधी लेन पठायो। दुष्ट हन्यो कपि बीच शैल शिर राखि सिधायो॥ शैल शीश देखत भरत तानि मारि शायक विकट। राम कहत भेंटत कह्यो लषण घाय पीड़ा सुभट॥ ६॥

अति सनेह भेंटयो भरत कह्यो कीश चढ़ुबाण। बिलम होहि मारग अगम पठवौं तोहिं प्रमाण॥ पठवहुँ तोहिं प्रमाण समुझि पुनि कहत कपीशा। तव प्रतापते नाथ जाउँ जहँ प्रभु जगदीशा॥ प्रभु जगदीश बिचारिके दोउ पग धरि पायन परत। धन्य धन्य हनुमन्त जग अति सनेह भेंटयो भरत॥ ७॥

लक्ष्मण उठि ठाढ़े भयो कीन्हो वैद्य उपाय। सुनि रावण संशय भयो भ्राता जाय जगाय॥ भ्राता जाय जगाय कहे कारण सब जेते। तेहिं तब कह्यो न मनुज ब्रह्म प्रभु कपि सुर तेते॥ कपि सुर रघुबर ब्रह्म हैं तेहि विरोध को नहिं गयो। यह कहि रण मण्डल गयो लक्ष्मण उठि ठाढ़े भयो॥ ८॥

मारि दुष्ट रण दलिमले सुर दुन्दुभी बजाय। लक्ष्मणको आयसु दियो तात लङ्कपुर जाय॥ तात लङ्कपुर माहिं हतहु रावण सुत जाई। आयसु शिर धरि लषण हत्यो देवन दुख-

दाई॥ दुखदाई मारे सकल रावण मन शोचत चले। जय जय रघुवंशमणि मारि दुष्ट रण दलमले॥ ९॥

रण रावण आतुर चल्यो असुरसेनदल साथ। करत युद्ध देवन डरत धरत शरासन हाथ॥ धरत शरासन हाथ चलत महि दिग्गज डोलैं। क्षुभित उदधि जल शृङ्ग शैल खसि महिधर बोलैं॥ महिधर बोलैं अति सभय रबि मुद्रित सब थल हल्यो। भुज प्रचण्ड रण मण्डियो रावण रण आतुर चल्यो॥ १०॥

श्रीरामरावणयुद्धको को कबि पावहि पार। शेष शारदा निगम बिधि शङ्कर मुनि अवतार॥ शङ्कर मुनि अवतार कल्प कोटिन कहि हारैं। बल दल समर प्रचण्ड मन्द जे कहन बिचारैं॥ कहन बिचारैं मति कवन सब कहिं हारे युद्धको। तुलसिदास सो किम कहै रामरावणयुद्धको॥ ११॥

प्रभु मारयो प्रभु ह्वै गयो ताको बरणै कौन। बल पौरुष अरु बीरता जानत रबि शशि पौन॥ जानत रबि शशि पौन बड़ो रण रावण कीन्हो। निज दल सम गति ताहि परमपद पावन दीन्हों॥ पावन पद लखि देव सब पुष्प बृष्टि दुन्दुभि दयो। करहिं विनय सादर सकल प्रभु मारयो प्रभु ह्वै गयो॥ १२॥

सियसङ्कट दूरी करयो राज बिभीषण दीन। सत्य सुयश कपिको कह्यो शपथ सौय शुचि कीन॥ शपथ सौय शुचि कौन चढ़े पुष्पक रघुराई। कपि सिय लषण समेत चले सुर जयति सुनाई॥ जय जय प्रभु खलदल दल्यो सुर मुनि द्विज महि दुख हरयो। अमर नाग भूतल सुखी सियसङ्कट दूरी करयो॥ १३॥

पूजा शङ्करकी करी सेतु सिया दरशाय। पञ्चबटी कुश-जहि मिलि अत्रि आदि ऋषिराय॥ अत्रि आदि ऋषिराय मिले अनसूयहि जाई। आशिष आयसु पाय चले आगे रघुराई॥ रघुराई आये तहाँ चित्रकूट मङ्गल शरी। पै-अन्हाय मुनिगण मिले पूजा शङ्करकी करी॥ १४॥

आयसु पायो मुनि दयो चले हर्षि श्रीराम। यमुनहि पूजि सप्रेममय प्रमुदित कीन्ह प्रणाम॥ कीन्ह प्रयाग प्रणाम मिले मुनिगण प्रभु जाई। करि मज्जन सिय सहित बिप्र मान्यता बड़ाई॥ मान बड़ाई पूजिकै पुनि बिमान आतुर गयो मिले निषादहि गङ्गतट आयसु पायो मुनि दयो॥ १५॥

कपि हनुमन्त पठाइयो भरत कुशलता देखि। आवत सिय लछ्मण सहित यह तुम कहौ विशेषि यह तुम कहौ विशेषि प्रातउठि भरत निहारौं। पुरवासि न पुनि मिलौं मातुको शोच निवारौं॥ शोच निवारौं अवधको सब प्रकार समुझाइयो। भरत प्रबोधन हेत प्रभु कपि हनुमन्त पठाइयो॥ १६॥

पुनि निषाद उर लाइयो रघुपति करुणापुञ्ज। लै आयो मन्दिर परम सुजल धोय पदकञ्ज॥ सुजल धोय पदकञ्ज रुचिर आसन बैठारयो। धूप दीप नैवेद्य फूल फल अङ्कुर धारयो॥ अङ्कुर खाये प्रेम युत राम बहुत सुख पाइयो। प्रात समाज बिमान चढ़ि पुनि निषाद उर लाइयो॥ १७॥

भरत देखि हनुमन्त जब कृश शरीर दुख दीन। जटा शीश मुनिव्रत धरम प्रेम पाँवरी लीन॥ प्रेम पाँवरी लीन राम सिय वदन उचारो। कुश आसन आसीन बसन भूषण तजि डारो॥ भूषण तजि भजि नाम प्रभु अवधि अन्त दिन आहि रव। अहह मोहि धिक धिक कहत भरत देखि हनुमन्त जब॥ १८॥

सुनहु भरत हनुमत कह्यो आय लक्ष्मण सिय राम। समेत मङ्गल कुशल जीति असुर संग्राम॥ जीति असुर संग्राम देव सब स्वथल बसाये। राज बिभीषण दीन्ह सुयश नारद शिव गाये॥ नारद शारद शम्भु शुक प्रभु कीरति पावन लह्यो। सो प्रभु आवत अवधपुर सुनहु भरत हनुमत कह्यो॥ १६ ॥

सुनत भरत आनँद लह्यो पर्म भावती बात। चकित थकित सुख सपनधौं कहत कोई साच्चात॥ कहत कोई साच्चात भरत पुनि नयन उघारे। पुनि हनुमत कह राम अवध आये सुखभारे॥ सुखभारे उठि भरतकर हिये भेंटि आनँद गह्यो। अस्रुपात पातन पुलकि सुनत भरत आनँद लह्यो॥ २० ॥

आये यह सन्देश लै कहा देहुँ तोहिं तात। यहि पटतर त्रयलोक्य नहिं कह्यो अमृत सम बात॥ कह्यो अमृत सम बात रामसिय कुशल विशेखी। लच्मण सहित सुचेम अवध आवत तुम देखी॥ आवत देखि बिशेषि तुम कह हनुमन्त प्रदेश लै। मिले बहुरि कपि कण्ठलगि आये यह सन्देश लै॥ २१ ॥

अवध आय प्रकटी सबै गुरु पुरजन समुझाय। मातु कुशल आये लषण सीय सहित रघुराय॥ सीय सहित रघुराय सजहु मङ्गल पुरनारी। बन्दनवार पताक चर्म चामर गज भारी॥ गज भारी रथ तुरग सँग साजि भरत मङ्गल तबै। चले नगर बाहिर मिलन पुरशोभा प्रकटी सबै॥ २२ ॥

भरत सङ्ग हनुमन्त लै देखत गगन बिमान। नगर नारि नर देखि कै उतरे कृपानिधान॥ उतरे कृपानिधान मिले गुरु प्रथम गोसाँई। आशिष देय सनेह कुशल पूछी मुनि-

राई॥ मुनिराई प्रभु भेंटिकै भरत हृदय भगवन्त लै। अति सनेह पूरे मगन भरत सङ्ग हनुमन्त लै॥ २३॥

मिले सकल पुर जन मुदित राम चरित यह कौन। सब जानत प्रथमहि मिले हमकहं राम प्रवीन॥ हमकहँ राम प्रवीन ऊँच मध्यम नर नारी। यथा योग्य मिलि सबहि बहुरि भेंटी महतारी॥ भेंटी महतारी सबै प्रथम कैकयी पर्म हित। बिरहबिथा नाशी सकल मिले सकल पुरजन मुदित॥ २४॥

इति लङ्काकाण्डसमाप्तः॥

अथ उत्तरकाण्ड प्रारम्भ।

राम अवध आये कुशल घर घर मङ्गल साज। पुरी भई अमरावती रामराज्यके काज॥ रामराज्यके काज भरत सब साज सजाई। सुर गन्धर्व मुनीश सकल आये सुरसांई॥ सुरसांई मङ्गल सजे बजे अवध दुन्दुभि विमल। बर्षि सुमन जय जय कहत राम अवध आये कुशल॥ १॥

शुभ सिंहासन शुचिबन्यो रघुपति बैठे आप। भूषण मणि-गण जगमगत कोटिन भानुप्रताप॥ कोटिन भानुप्रताप वेदध्वनि विप्र उचारैं। छत्रचँवर धनुबाण दण्ड भरतादिक धारैं॥ भरतादिक सुखमय मगन सिय आई भूषण घन्यो। रामसिया शोभित भये शुभ सिंहासन शुचि बन्यो॥ २॥

प्रथम तिलक गुरु उच्चरयो विप्र न आयसु दीन। देव सुमिन जय उच्चरो दुन्दुभि हने नवोन। दुन्दुभि हने नवोन सबहि बर अस्तुति ठानी। मातन आरति साजि गीत गावहिं मृदुबानी॥ मृदुबानी सुर मुनि सबै जयति राम जय जय करयो। बन्दि वेद बिरदावली प्रथम तिलक गुरु उच्चरयो॥ ३॥

कहि बशिष्ठ प्रथमै वचन सब प्रकार सामर्थ। सुर पाले खलदल दले द्विज महि सज्जन अर्थ॥ द्विज महि सज्जन अर्थ भये दशरथके बारे। निगम सेतु प्रतिपालि सुयश जगमहँ विस्तारे॥ विस्तारे अद्भुत चरित पालय लय कृत पुनि चरन-जय जय नर अवधेशसुत कह बशिष्ठ प्रथमै वचन॥ ४॥

कहि विधि सबहि सुनायके रामचरित्र अपार। निगम शेष शङ्कर सकल को जग जाननहार॥ को जग जाननहार अमित अवतार विहारी। सुर सज्जनके हेत करत लीला बपुधारी॥ लीला तन मङ्गलभवन खल दलि भुवन बसायके। जगमङ्गलकारणकरण कह बिधि सबहि सुनायके॥ ५॥

उठि शङ्कर जय जय कहत राम स्वरूप तुम्हार। मङ्गल-मय मूरति मधुर सुमिरत सब दातार॥ सुमिरत सब दातार लहत सुख सुन्दर ध्याये। गुणगण पावन गाय तरत भव-निधि सुख पाये। सुख पाये मुनिगण मनहिं ज्ञान ध्यान सो ज्यहि चहत। रविकुलकमलदिनेश प्रभु उठि शङ्कर जय जय कहत॥ ६॥

सुरपति कहत प्रणाम करि सुनहु राम सुरभूप। प्रति अवतार अपार गुण बर्णत वेद अनूप॥ बर्णत वेद अनूप दुष्टजन खण्डनहारे। मन गोतनको त्वसित राम तुमताहि पियारे॥ ताहि पियारे तुम लगत बचे मोह

मद नामके। हम निशिदिन विषयाविवश सुरपति कहत प्रणामके ॥ ७ ॥

रविअञ्जलि जोरे कहत राम सुनहु मम बैन। कृपा करिय निज चरण रति निशि दिन राजिवनैन॥ दीजिय राजिवनयन तोष बड़ हृदय हमारे। जबते मम कुल जन्म रावरे नरतन धारे॥ नरतन धरि यश विस्तरो चिरञ्जीव जोरी रहत। जय जय रविकुलरविविमल रविअञ्जलि जोरे कहत ॥ ८ ॥

अनिल अनल धर विनय करि खलखण्डन तुम राम। राज आज तवपुर विशद राजहि जग अभिराम॥ राजहि जग अभिराम सन्त सज्जन सुखकारी। नरतन धनु धरि हाथ हरो धरणी अघभारी॥ धरणीमण्डन खण्डि खल राज विराजत भुवन भरि। जय जय श्रीसीतारमन अनिल अनल धर विनय करि ॥ ९ ॥

निगम विप्रतन करि कहत राम सुनहु सुरईश। कोटि कोटि यतन करत नहिं पावत योगीश॥ नहिं पावत योगीश हृदय शङ्कर पचिहारे। विधि सनकादिक नेम धर्म करि तुम्हें निहारे॥ तुम्हें निहारत सुख लहैं ते कपि भालुहि कर गहैं। जयति राम लीला अगम निगम विप्रतन करि कहैं ॥ १० ॥

शारद नारद जोरि कर विनय करत चित लाय। अद्भुत चरित तुम्हार प्रभु सुनिये श्रीरघुराय॥ सुनिये श्रीरघुराय पिता दशरथ सम नाहीं। तृण सम तन तजि दीन सुयश जाको जगमाहीं॥ सुयश कियो जेहि जन्म भरि गयो बिरह ल अमरघर। गीधक्रिया निजकर कहैं शारद नारद जोरि कर ॥ ११ ॥

अस्तुति करि मुनि सुर गये राम भरत बुलवाय। कपि-पति ऋच्छ बिभीषणौ नल नीलहि अन्हवाय॥ नल नीलहि अन्हवाय भरत भूषण पहिराये। अङ्गद सहित समाज राम सब निकट बुलाये॥ राम निकट बैठारिके मधुर वचन बोलत भये। कपिकीरति प्रभु उच्चरत अस्तुति करि मुनि सुर गये॥ १२॥

मुनिनायक ये नील नल कीन्हे अद्भुत कर्म। शत योजन सागर बँध्यो सेतु उपल गुरु धर्म॥ सेतु उपल गुरु धर्म शीश रावणके फारे। मन्दिर सुवरण खम्भ कलश महिधर बहु डारे॥ महिधर डारि सँघारि अरि रण मण्डल हति असुरदल। महा-बीर बानत बल सुनि नायक ये नील नल॥ १३॥

मुनिनायक कपिराज ये करे हमारे काज। बानर कोटि पठाइयो सिय शोधन शिरताज॥ सिय शोधन शिरताज कर्‌यो रणमण्डल भारी। मन्त्र तन्त्र सब सुदृढ़ सेन बल अबल बिचारी॥ अबल बिचारी ठौर जहँ तहँ बल दिये समाज ये। महाबली बुधिवन्त अति मुनिनायक कपि-राज ये॥ १४॥

सुनहु बिभीषण बहु कियो मिल्यो मोहिं तजि भाय। रावण अरु घननादकी दई मौचु दर्शाय॥ दई मौचु दर्शाय गदा पुनि रावण मार्‌यो। लच्छण घायल भये बैद्यको नाम उचार्‌यो॥ नाम उचार्‌यो शत्रु दल करि उपाय लच्छण जियो। राम कहत मुनिराजसों सुनहु बिभीषण बहु कियो॥ १५॥

ऋच्छनाथ बल दल महा रावण हत्यो प्रचारि। मेघनादको पाँउ धरि लङ्क गयो फटकारि॥ लङ्क गयो फटकारि असुर दल दले समाजन। सेतु बाँधि धरि यूथ हाथ शिर धरि गिरि राजन॥ शिर धरि गिरि रावण दले सभय शत्रु रण

नहिं रहा। मुनिनायक लायक सबै ऋच्छनाथ बल दल महा ॥ १६ ॥

ये अङ्गद मुनि अतिबली जिन रावणपर जाय। मान ज्ञान अरिदल दल्यो रोपि सभा धरि पाँय॥ रोपि सभा धरि पाँय केश धरि रावण रानी। महि कठोरि पुनि हल्यो वीश दश चरण डरानी॥ चरण धरे कम्पत असुर सैन समर अति दलमली। रणविजयी शुभ सुयशदा ये अङ्गद मुनि अतिबली ॥ १७ ॥

ये हनुमन्त विचारि मुनि प्रथम मिलाये मोहि। कपिपति पुनि दल जोरिकै लै मुद्रिक कर जोहि॥ लै मुद्रिक कर जोहि बौर लै सुभट सिधायो। तृषित लगे मब मरण जाय तेहि सुजल पिआयो॥ सुजल पिआयो सबहिको समुद-तीर रचि मन्त्र पुनि। पत्त तत्त सम्पाति दै ये हनुमन्त विचारि मुनि ॥ १८ ॥

गयो उदधि पारै सुभट साथी तट बैठाय। देखि सीय मणि हाथ लै बन उजारि फल खाय॥ बन उजारि फल खाय असुर मारे भट भारी। करि उपाय पुर लङ्क कूदि घर घर पुर जारी॥ जारि बारि पुनि वारिनिधि कूदि चल्यो व्यंकट बिकट। गर्जत घोर कठोर अति गयो उदधि पारै सुभट ॥ १९ ॥

सिय मणि द दल लै चल्यो दिग्गज दरकत अङ्ग। पार जाय घेर्‌यो अरिहि दुर्ग कियो पुर भङ्ग॥ दुर्ग कियो पुर भङ्ग समर लक्ष्मण दुख पायो। द्रोणागिरि धरि शीश रयन नभ-मारग धायो॥ मारग धावत शर लग्यो भरत कोपि उर थल दल्यो। लषण शोच उरमानिकै सिय हित गिरि शिर लै चल्यो ॥ २० ॥

कहँ लौं गुण मुनिमैं कहौं कपि समाजके काज। भरत लषणते प्रिय सदा कपिनायक शिरताज॥ कपि नायक शिरताज मिले उठि सबहि बहोरी। बिदा किये सन्मानि परस्पर प्रीति न थोरी॥ प्रीति न थोरी प्रभु करी सब प्रणाम करि सुख लहौ। बार बार यश प्रभु कहैं कहँलौं गुण मुनिमैं कहौं॥ २१॥

राम राज राजत भयो गयो सकल दुख भागि। रोग शोक अपगति मरण काल कर्म गुण त्यागि॥ काल कर्म गुण त्यागि भई सतयुगकी करणी। बारि दमन गति बारि भई सुरभी सुर धरणी॥ सुरभी सुर धरणी भई कपट दम्भ पाखँड गयो। धर्म विवेक विचार नर राम राज राजत भयो॥ २२॥

काम क्रोध अघ रोग सब मान मोह मद गर्व। दोष दुःख ज्वर पौर खल दारिददाहन सर्व॥ दारिददाहन सर्व बैर परधन परनारी। गे सुभाय सब छूटि गई मति परअपकारी॥ परउपकारी लोग सुख भोग योग महि प्रकट अब। गये अमङ्गल कृतं जगत काम क्रोध अघ रोग सब॥ २३॥

नेम प्रेम प्रकटे जगत दया क्षमा सन्तोष। योग यज्ञ जप तप सुपथ वेद सुमङ्गल पोष॥ बेद सुमङ्गल पोष रहौ परमारथ पूरी। पर अघ निज कृत दुःकृत कुकृत दुस्तर भय दूरी॥ दुस्तर भय दूरी करै राम तेज रबि जगमगत। कमल कोक सब धर्म बर नेम प्रेम प्रकटे जगत॥ २४॥

एक राम गुण गायबो यह कलिकर्म न और। ताते तुलसीदासके मन्त्र यहै शिरमौर॥ मन्त्र यहै शिरमौर राम शुचि कीरति गाऊँ। साधन उत्तम जानि सुमति निज मनहि दृढ़ाऊँ॥ मनहि दृढ़ाऊँ मन्त्र यह जिहि प्रसाद

सुख पायबो। शुक नारदको सीख यह एक रामगुण गायबो॥ २५॥

एक राम मुख नाम धृत ध्यान रामको रूप। राम चरित गावत परम धर्म पवित्र अनूप॥ धर्म पवित्र अनूप करिय जब लौं जग जीजै। रसना रस करि चरित सरित निशि बासर पीजै॥ निशि वासर श्रम तजि भजं तुलसिदास यह शुभ सुकृत। कामधेनु कलि कल्पतरु एक राम मुख नाम धृत॥ २६॥

इति श्री उत्तरकाण्ड समाप्तम॥

अथ रामायण छन्दावली ॥

दशकन्धर घटकर्ण अघ भारधरा दुख होइ। गई गगन गोदेह धरि कहि सुरपतिसों रोइ १॥ छन्दचौपय्या॥ सुरपतिगुरु बूझा सुरमति सूझा गे विधिलोक तुरन्ता। विधि सुर समुझाये सङ्ग सिधाये जहँ सोवत श्रीकन्ता॥ दशमुखकी करणी बहुविधि बरणी धरणी जेहि विधि रोई। सुनि शारँगपाणी भइ नभवाणी विधि जाना नहि कोई॥ विधि बचन सुनाये सुर समुझाये तजहु शोच मन देवा। जो जनहितकारी प्रभु असुरारी करहिं पार सोइ खेवा॥ वानर गोपूछा मन धरि रीछा बसहु जाय बनमाहीं। अवधेशनिकेना व्यूहसमेता प्रभु आवत तुमपाहीं २॥ दोहा॥ यहि विधि बिबुध बिबोधि गे गे सुर निज निज धाम। कछु काल बीते अवध प्रकट भये श्रीराम ३॥ शशिवदनछन्द॥ जनहितकारी प्रकट सुरारी। नरतनधारी छबिसुखकारी॥ मृदुभुवकारी अरिदलहारी। सुमुख निहारी बलि महतारी॥ अवधविहारी भवभयहारी। जयतपुरारी सबअघहारी॥ अवशउधारी यह प्रणभारी। तुलसिहि तारी शरण सम्हारी ४॥ हरिगीतिकाछन्द॥ सम्हारि शरण विचारि तुलसी रामयश गावत लियो। त्रयतापशमन कलेशहरको और नहिं जग मग बियो॥ जेहि गाइ यमन किरातखल हरिपुर गये करि सुधि हियो। रघुबीरयश सुनि हिय न हरष्यो बुरो तिन अपनो कियो ५॥ सुन्दरीछन्द॥ राजत मेचक अङ्ग महाछवि। बोल मनोहर कहहिं महाकबि॥ जो सुनिके

जरि जाय महामल। सादर गावहिं पावहिं सम्बल॥ तूण कसे कटि चाप शिलीमुख। मातु बिलोकि अपार लहे सुख॥ बालचरित्र करे रघुनन्दन। लोग निहारि हरे दुखबन्दन॥ ग्यारह वर्षके राम भये जब। बोलि वशिष्ठ उपनयन दये तब॥ आइ तपोधन याचि लये सुत। बोलि वशिष्ठहि राउ दये युत॥ ताड़क तारि सुरारि दई गति। बालविनोदक देन किये मति॥ रामहिं मन्त्र दये तब श्रीमति। राम लषण मुनि काज किये अति॥ मारि सुबाहु करी मखकी जब। देत मुनीश अशीश महा तब॥ गौतमतापसतीय तरी मग। राम धरे मिथिलापुरको पग॥ आइ विलोकि विदेह महाछवि। देखि नरेश समाज गयो दबि॥ आयसु दीन्ह विदेह नरेशनु। चाप चाढ़ वत पूज महेशनु॥ डिगै न खण्डेउ राम प्रयासनु। सूमके बीजसमान शरासनु॥ मेलि सिया जयमाल मनोहर। बाजि बधाव धरा अरु अम्बर॥ व्याहि चले नृप चारि सहोदर। मारग वीच मिले फरसाधर॥ चापहि सौंपि भये तपसीवर। राउ विवाहि आइ अपने घर॥ बालचरित्र विवाह यथामति। जो सुनिके नरनारि लहे गति ६॥ दोहा॥ चरित चारु रघुवीरके सुनि मन कीन्ह विचार। निज मनसों तुलसी कहे कस न होइ भव पार ७॥

इति श्रीबालकाण्डसमाप्तम्॥

चामरछन्द॥ आय कौशलेशने सुहाय आरसी गही। कानने समीप केश लेखि श्वेत है सही॥ रायकानमें मनोजराय आइ यों कही। राज देव रामको बने सिधाव तो सही॥

केकयी सुनी सुवात शोकमाल ते गही। राज माँग पूतको श्रीरामको वने कही॥ रादनते सुनी सो बात तात ताप यों तये। रामसीय सङ्गले सवन्धु काननै गये॥ रायरामचन्द्र साथ प्राण काढ़िकै दये। गङ्गप्राग होइकै सुचित्रकूटमें गये॥ राजकाजके भरत्थ शोकसिन्धु में भले। साथ लै वशिष्ठ वन्धु पांयप्याद ही चले॥ केवटे सवन्धु भेंटि राम प्राग जाइकै। राम दीन पावरी हिये सुलौन लाइकै १॥ दोहा॥ राम पावरी पाइकै गवन गेहको कौन। गणक बोलि तब भरथने नेमधरमव्रत लौन २॥

इति श्रीअयोध्याकाण्डसमाप्तम्॥

सुन्दरीछन्द॥ विदेहजातकी कहे सुरेशतातने छुवो। श्रीरामवाण लागते विहीननैन सो हुवो॥ श्रीदेवदत्त तातको श्रीराम बन्दना कियो। तिन्होंकि तीय सीयको सचैलभूषणो दियो॥ विराध वद्धि रामचन्द्र शारभङ्गके गयो। तहां सुरेश देखिकै सवन्धु सुःखसो भयो॥ वहोरि श्रीसवन्धुसङ्ग पञ्चवाटिका गये। तहांनखानकाननाक सूपनेखके हये॥ त्रिङ्कुश आदिदै सुरारि एक वाणसों हये। सुनो सो बात रावणा मरीचपास सो गये॥ कही कथा सुनी तिनो सो नेकुरङ्ग सो भयो। लखो श्रीराम मारि ताहि धाम आपनो दयो॥ सुन्यो सो शब्द सीय शेष राम पास पाठयो कर्यो विरूप रावणा लै सीय जातयो भयो॥ सवन्धुशाल देखिकै कृपाल दुःखमें पगे। तहां ललामशालते तिन्होंतो बूझते लगे॥ कहो सुसुद्धि गोधने कवन्धवन्धकै चले। करी सनाथ शेवरी सवन्धु वेरलै भले॥ बहोरि पम्पताल श्रीकृपालराम जायकै। तहां

मुनीशनारद कियो प्रणाम आइके १॥ दोहा॥ लखि सुकण्ठ श्रीरामकहँ मनमहँ कीन्ह विचार। पुरुषसिंह ये कवन हैं देखहु पवनकुमार २॥

इति श्रीआरण्यकाण्डसमाप्तम॥

चञ्चरीछन्द॥ रामरामको लेवाइके तब शैल ऊपर जाइके। जात वेदहि बीच दैकरि कीन्ह प्रीति दृढ़ाइके। क्यों रहो तुम शैलऊपर राम बूझ कपीशसों॥ त्यों कह्यो व्योहार सगरो बालिको डर रामसों॥ बालिको बधि बाणसों कपिनाथ तोहिं करों सही। जानकी तुमको मिलावों विहँसिकै कपिने कही॥ बालि मारि कृपालराम सुराज दीन्ह सुकण्ठको। मास चारि सुबासकै तहँ आसना करि कण्ठको॥ जानकी सुधि लेनको कपिईश कीश पठाइके। मासमें सुधि वेगि ल्यावहु खोजि देखहु जाइके १॥ दोहा॥ कीन्ह्यो विवर प्रवेश तिन अशन कियो फलफूल। पूँछि तियहि मूँदे नयन ठाढ़े जलनिधिकूल २॥

इति श्रीकिष्किन्धाकाण्डसमाप्तम्॥

तोटकछन्द॥ हनुमान गयो तरि सागरको। उलघ्यो जनु खोद अजाखुरको॥ गिरि ऊपरपै चढ़ि लङ्क लखी। हनि लङ्किनिको विधिबात भखी॥ लघुरूप धर्यो हनुमान बली। निशि लङ्क बिलोकि नाइ भली॥ रघुबीर प्रिया कितहूं न मिली। तहँ देखि विभीषणकेरि थली॥ रघुबीर सुनामहि चित्त करो। लखिकै हुलसान हियो सुभर्यो॥ तेहिको